नागफनी के फूल

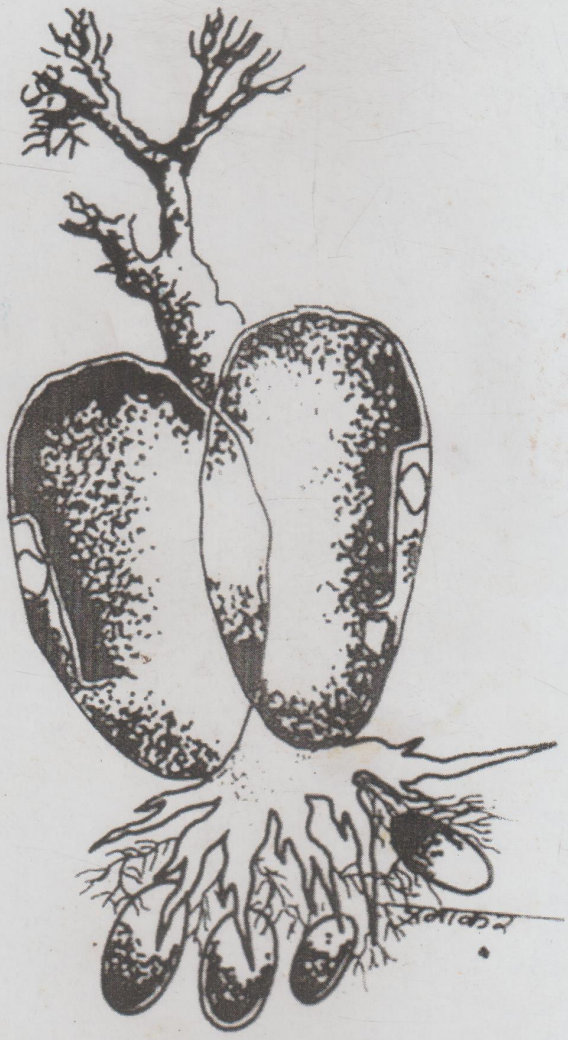

आभा पूर्वे

नागफनी के फूल

गजल-संग्रह

कवयित्री

डॉ. आभा पूर्वे

अध्यक्ष : बी. एड. विभाग

सुन्दरवती महिला महाविद्यालय

भागलपुर, बिहार-८१२००१

प्रकाशक

दर्शना पब्लिकेशन, भागलपुर (बिहार)

© Dr. Abha purve

कृति : नागफनी के फूल
कवयित्री : डॉ. आभा पूर्वे
संस्करण : मार्च, ई. २०१५
प्रकाशक : दर्शना पब्लिकेशन, भागलपुर (बिहार)
मुद्रक : एमएलपी, भागलपुर
मूल्य : १५ रूपये

NAGPHANI KE PHOOL By Dr. Abha purve

आदरणीया

प्रो. (डॉ.) मीना रानी

(प्राचार्या, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर)

के नाम

—आभा

पुरोवाक्

इस संग्रह में दो दशक पूर्व रची गयीं गजलें संकलित हैं, इनमें अधिकांश या तो किसी पुस्तक में प्रकाशित हो चुकी हैं, या फिर पत्र-पत्रिकाओं में । बहुत सारी गजलें तो बहुत ढूंढने के बाद भी नहीं मिली । मिलती कैसे वे कॉपियों और डायरियों में जो लिखी हुई भी और वे कॉपियाँ/डायरियाँ न जाने कब इधर-उधर हो गयी थीं । सच तो यही है कि जमीन मकान के चक्कर में साहित्य ही कहीं खो गया । जो कुछ गजलें बच पायीं, वे इस संग्रह में है । बताइएगा, गजलें कैसी लगीं । प्रतीक्षा रहेगी ।

सम्पादक : नया हस्तक्षेप
शरतचन्द्र पथ, मशाकचक
भागलपुर, ८१२००१ (बिहार)

—आभा
रामनवमी

गजल-क्रम

१. दुनिया का जो मेला है/७
२. जीवन शूल-बिछौना है/८
३. नदियों में जब धार नहीं/९
४. कैसा सूरज कैसा भोर/१०
५. सबको सब से भय-डर है/११
६. जिसकी ताकत, उसका घन/१२
७. कितना यहाँ अंधेरा है/१३
८. जितना नहीं है गोली में/१४
९. जैसे भी हो चलना होगा/१५
१०. व्योम पर हो जब चरण/१६
११. ठोस जगत भी पानी है/१७
१२. जैसी अभी सियासत है/१८
१३. एक तुम्हारा जो मुझे, नहीं मिला है पास /१९
१४. अब जब आया है चढ़ा, नभ पर घन आषाढ़ /२०
१५. घिर के आये मेघ जब, मन मुस्काया गीत /२१
१६. हाथ तुम्हारा थामे चलना अच्छा लगता है/२२
१७. यह गुजर जायेगा रहगुजर धीरे-धीरे/२३
१८. नई सदी की भोर में, लाशों की बारात/२४
१९. जुल्म का मुझपर तुम्हारा सिलसिला है/२५
२०. जीवन अपना-सा लगा, जब तुम आये द्वार /२६
२१. कहते हैं विद्वान सब, ज्ञान इन्द्रियाँ पाँच /२७
२२. शीतल-शीतल तन हुआ, आया सावन मास /२८
२३. कैसे जोड़े प्रीत की, तुमसे अपनी डोर /२९
२४. चंदन का घर प्रेम है, जिसका ओर न छोर /३०
२५. शासन—खाई-चभच्चा रँ/३१
२६. केन्हों भुतहा गाँव लगै/३२

१.

दुनिया का जो मेला है
चोर-सिपाही-खेला है ।

कैसे कह दूँ समय शांत है
चलता ले कर ढेला है ।

उसका सपना और बढ़ा है
जिसके हाथ अधेला है।

हथियाने की बात जहाँ है
गुरु से आगे चेला है ।

भरी भीड़ में उसको देखा
मुझको लगा अकेला है

नींद नहीं आती आँखों को
घोर निशा की वेला है।

मुझको अपनों ने गाली दी
ऐसा दुःख भी झेला है ।

२.

जीवन शूल-बिछौना है
फिर फूलों का दोना है।

दीवारें सब गिरी हुई हैं
बचा हुआ एक कोना है।

दुख तो ओझा-गुनी हुआ है
सुख भी जादू-टोना है।

मुँह से सच-सच निकल गया तो
जीवन भर ही रोना है।

यह भी पता नहीं है मुझको
क्या पाना क्या खोना है।

दुःख को पीतल क्यूँ बोलूं मैं
वह तो असली सोना है ।

कल की चिन्ता कौन करे अब
जो होना है होना है ।

३.

नदियों में जब धार नहीं
उतरूंगा मैं पार नहीं ।

दुख में आँसू ही न छलके
ऐसा तो संसार नहीं ।

अपने को सन्यासी कहता
छोड़ा है घरबार नहीं ।

प्यार छिपा लूं भय के मारे
इतना भी लाचार नहीं ।

हरदम धोखा खा जाते हो
छाया है, दीवार नहीं ।

कितने दिन वह देश चलेगा
जिसकी हो सरकार नहीं।

प्यार जताने वह बैठा है
जिसको आता प्यार नहीं।

४.

कैसा सूरज कैसा भोर
घना तमस है चारो ओर।

कैसा होगा नगर क्या कहूँ
गाँवों में जब ऐसा शोर।

हंसी अधर के कोनों में है
भीगे हैं आंखों के कोर ।

आंधी की गति मोड़ चलूं मैं
रहा कहाँ अब वैसा जोर।

देवस्थल के पीछे छुप कर
जमा हुआ है आदमखोर।

अनजाने है देश-डगर सब
बादल-बिजली भी घनघोर।

छितराए हैं कुसुम भाव के
रिश्ते की टूटी हैं डोर ।

५.

सबको सब से भय-डर है
यही कथा तो घर-घर है।

अपवादों की बात अलग है
बाकी तो दिल पत्थर है।

क्या वसन्त ही आया, जबकि
साथ ना लाया मंजर है।

यहाँ प्रजा क्या, चीतल जैसी
सम्मुख शासन-अजगर है।

सत्ता आगे न्याय नीति को
मैंने देखा थरथर है।

मैं भी उसको जान रहा हूँ
बोल रहा जो हर-हर है।

मेरा रुदन कोई ना जाने
ढोल, मंजीरा, झांझर है ।

६.

जिसकी ताकत, उसका घन
लोकतंत्र का पागलपन।

सब दिन सूखा-सूखा-सा
कब सावन है, कब अगहन।

नागफनी का जंगल भी क्या
कभी बनेगा चन्दन वन ?

कब तक किसके साथ रहा है
हीरा, मोती या कंचन ?

सावन तो आया है लेकिन
सता रहा मन को राशन।

कल बोलेगा बच्चा बच्चा
लौटाओ मेरा बचपन,

नई सदी में यह भी समझो
प्यार यहाँ है काला धन ।

७.

कितना यहाँ अंधेरा है
किस योगिन का फेरा है।

मेरा, तेरा, उसका जीवन
एक रात का डेरा है।

सदियों बीत गयीं, रंग अब तक
किसने चित्र उकेरा है ?

सबके दिल को छीन ले गया
कितना समय लुटेरा है।

एक फूल है खिला बीच में
नागफनी का घेरा है।

तुम रातों की बात कर रहे
दिखता नहीं सवेरा है।

सब कुछ ठीक ठाक कर देगा
दुख तो वही ठठेरा है।

८.

जितना नहीं है गोली में
जहर भरा है बोली में।

समय बहुत शैतान हो गया
खंजर रख लो चोली में।

रुदन भरा है राजभवन में
हँसी-ठिठोली खोली में।

रंगों के बदले में यह क्या
खून बह गया होली में।

कहाँ पता था यह भी होगा
लाश मिलेगी डोली में।

धनवानों की किस्मत देखी
इस फकीर की झोली में ।

९.

जैसे भी हो चलना होगा
आगे और निकलना होगा।

मिलने पर भी दुख रहता है
न जाने कब मिलना होगा।

जोर लगा कर तुम देखो तो
चट्टानों को हिलना होगा।

प्रेम मुहब्बत से चिढ़ता था
शायद उसको दिल न होगा।

अब गुलाब जब बने हुए हो
काँटो पर ही खिलना होगा।

उस दिन समझो मौत हो गई
जिस दिन मुँह को सिलना होगा

१०.

व्योम पर हो जब चरण
क्या धरा पर संचरण ।

भाव के सम्मुख रहा
हारता ही व्याकरण।

मुक्ति की इच्छा करो
सामने तारण-तरण।

झूठ को जब सच करूँ
मृत्यु को कर लूँ वरण।

पुण्य को ही पाप बोले
कलयुगी यह आचरण।

इस तिमिर में देवता का
हो रहा है जागरण।

अब उठाओ सत्य पर से
झूठ का यह आवरण।

११.

ठोस जगत भी पानी है
दुनिया आनी-जानी है।

संगत किसकी कितनी पक्की
मैंने भी पहचानी है।

'भाग्य बड़ा बलशाली' कहना
यह भी तो नादानी है ।

औरत ही है वीणापाणी
काली और भवानी है।

किस्मत रही विरोधी लेकिन
हार कभी ना मानी है।

औरत को मत इतना समझो
सास, बहू, जेठानी है ।

मैंने अब तक हार न मानी
समझो नहीं कहानी है ।

१२.

जैसी अभी सियासत है
जनता पर वह आफत है ।

धन तो यहाँ सुरक्षित ही है
खतरे में बस इज्जत है ।

कोर्ट कचहरी सब कुछ ही है
न्यायी-न्याय बदारत है ।

शासक-शासित दो भागों में
किसका आखिर भारत है ?

जीने का उद्देश्य नहीं कुछ
उस जीने को लानत है ।

कहाँ रहे यह प्यार-मुहब्बत
भरी हुई जब नफरत है ।

मुझको झूठ सुहाता कब है
सच कहने की आदत है ।

१३.

एक तुम्हारा जो मुझे, नहीं मिला है पास
आंसू-आंसू हो गया, जीवन का इतिहास ।

कल तक घर के लोग थे, बैरी किया जो प्रीत
अब तो सारे गाँव-घर, हैं सौतिन औ सास ।

नेह लगाई क्या किया, दिल ऐसा बेचैन
सांसें-सांसे भी नहीं, हवा हुई उनचास ।

किससे-किससे जा कहूँ, अपनी हालत आग
मन भीगा नाचे फिरे, तन है तुलसीदास ।

सबके बैठी बीच भी, चित्त बहुत है दीन
कोई समझेगा नहीं, मेरा यह वनवास ।

जब से जाना नेह को, धरती हुई सरंग
मेरी मुट्ठी में हुआ, पूरा वह आकाश ।

प्यार तुम्हारा जो मिले, तो तोड़ूँ मैं ध्यान
तोड़ न सकती मृत्यु भी, आभा का उपवास।

१४.

अब जब आया है चढ़ा, नभ पर घन आषाढ़
मन तो पहले ही हुआ, अब है तन आषाढ़ ।

कितनी गरमी थी अभी, कैसी थी वह ताप
धरती पीड़ा भूल गई, पा साजन आषाढ़ ।

लगी गुदगुदी हवा को, बौराई यूँ आज
बजते दोनों हाथ में, ज्यों कंगन आषाढ़ ।

पुलकित हर्षित गगन है, गुमसुम भी है मौन
गड़ा हुआ ज्यों पा गया, ज्यों वह घन आषाढ़।

मरुआये तरु गुल्म ने, कहा उठा कर आंख
आये लेकिन देर से, तुम जीवन आषाढ़ ।

आया तो आषाढ़ है, जलती लेकिन देह
एक पिया बिन दिन लगे, ज्यों ईंधन आषाढ़।

आभा दोहा गजल लिख, बादल पर सौ बार
आया है कल लायेगा, मधु सावन आषाढ़ ।

१५.

घिर के आये मेघ जब, मन मुस्काया गीत
तन में तो बादल घिरे, देह रही क्यों रीत ।

तुम भी आना छोड़ गये, मैं भी हो गई मौन
किससे अपना हाल कहूँ, हारी अपनी जीत।

अपने थे जो दे गये, दिल पर सौ नासूर
ऐसे में क्यों छेड़ते, बादल तुम भी गीत ।

अब भी हूँ हैरान मैं, किसने तोड़ा मौन
मौन गया तो फुट पड़ा, विरह पीर संगीत ।

किससे अपना हाल कहूँ, तुम भी तो बेहाल
सांसे गिन-गिन तोड़ती, दीप स्नेह की प्रीत।

छोड़े जाते हो मुझे, मेरे अपने हाल
सूली पर जो टांग दे, मीत, मीत को मीत ।

आना बादल जान कर, मेरे घर के द्वार
आभा पहली बार है, तनमन से भयभीत ।

१६.

हाथ तुम्हारा थामे चलना अच्छा लगता है
ऐसे में कुछ और फिसलना अच्छा लगता है ।

एक अंधेरा हम दोनों को जग से रखता दूर
अंधेरे में तुमसे मिलना अच्छा लगता है ।

जिन बातों को सुनकर तुम भी जाने क्या सोचो
उन सब को गजलों में कहना अच्छा लगता है ।

तुम बोलो तो बोलो, 'सजनी' बहुत भली लगती
अब तो मैं भी बोलूँ, 'सजना' अच्छा लगता है।

एक बार क्या तन्हाई में मुझसे गले मिले
अब तन्हा-तन्हा ही मिलना अच्छा लगता है।

मत जाने की बात करो तुम दूर-दूर आखों से
साजन ही तो गहना सजना अच्छा लगता है।

१७.

यह गुजर जायेगा रहगुजर धीरे-धीरे
कट ही जायेगा यह भी सफर धीरे-धीरे।

होती जाती हूँ मैं भी बेखबर धीरे-धीरे
प्यार करने लगा है असर धीरे-धीरे ।

यह मुहब्बत है इक गाँव जो मिल गया तो
छूट जायेगा सारा शहर धीरे-धीरे ।

और कब तक करूँ मैं प्रतीक्षा यूँ ही,
अब तो झुकने लगी है कमर धीरे-धीरे ।

जान लेने से मैंने तुम्हें रोका कब,
जान ले लो मेरी तुम मगर धीरे-धीरे ।

जितनी बेचैनी है उनमें उनकी तरफ,
हाय ऐसा है क्यों यह इधर धीरे-धीरे ।

इश्क का काफिया इतना आसान क्या,
तुम भी जानोगे उसका बहर धीरे-धीरे ।

१८.

नई सदी की भोर में, लाशों की बारात
जाने क्या-क्या हाथ लगे, आयेगी जब रात ।

जाग रहा बन्दूक ले, खाली अब देमाग
रो-रो कर अब सो गये, दिल के वे जज्बात ।

कूल-किनारा कुछ नहीं, दिखता लाखो कोस
जिनगी छोटी नाव है, नाविक झंझावात ।

ऐसे युग में आ गये, जहाँ रीति अनरीति
घृणा, प्रेम अब बन गई, प्रेम लगे आघात ।

अब तो दुश्मन भी नहीं, दिखा सकेंगे खौफ
इतने हमने सह लिये, अपनों के उत्पात ।

दिल की होती बात कहाँ, मिला न कुछ अवकाश
मैंने पूछा नाम तो, उसने पूछी जात ।

भायेगी दुनिया कहां, यह तो तय है ठीक
जब तुमको भाया नहीं, आभा का ही साथ ।

१६.

जुल्म का मुझपर तुम्हारा सिलसिला है
पर नहीं कमजोर मेरा दिल किला है ।

जानती हूँ प्रेम धोखा आजकल है
पर मेरा ये दिल क्यों ऐसा बावला है ।

न्याय पर बैठा हुआ कातिल मेरा है
पेश मेरी जिन्दगी का मामला है ।

आग को पानी औ पानी आग कर दें
क्या बतायें क्या हमारा हौसला है ।

कल अकेले थे तो मंजिल सामने थी
आज मंजिल गुम फकत संग काफिला है।

कहने को कहते गजल हैं आज सब ही
पर गजल कहना बहुत भारी कला है ।

२०.

जीवन अपना-सा लगा, जब तुम आये द्वार
गुलदौदी का फूल-सा, कभी लगा कचनार ।

तुमने जो मुझको दिया, वही दे रही दान
घृणा नहीं मैं बांटती, जो तुम देते प्यार ।

जेठ मिलेगा किस तरह, व्याकुल मन यह सोच
अगहन जब आसिन हुआ, बरस रहा अंगार।

क्या निखरेगा देश यह, क्या निखरेंगे लोग
कविता बांचे द्वेष को, प्रीत हुई है भार ।

आकर यह किस समय में, ठहर गये सब लोग
मन तो मारा ही गया, बुद्धि हुई लाचार ।

आभा की दोहा गजल, देशी है यह माल
क्या आंकेगा दाम भी, गजलों के बाजार ।

२१.

कहते हैं विद्वान सब, ज्ञान इन्द्रियाँ पाँच
रोम-रोम इन्द्रियाँ हुई, लगी प्रेम की आँच ।

खा आई सौ चोट मैं, मुझसे हो गई भूल
प्रेम पंत के खंद में, ऐसी भरी कुलाँच ।

जब भी तुम मुझसे मिले, पत्थर फेंके चार
कैसे दीखे रूप अब, दिल तो टूटा काँच ।

सुख पाने की हवस ने, दूर किया ईमान
और इस सुख को छोड़ कर, मन पीड़ा को बाँच।

नई-नई यह सदी है, उतने नये हैं पाप
अमृत पाने तो गया, हाथ लगी है छाँछ ।

आज नहीं कल कहोगे, लगा-लगा कर हाँक
आभा की दोहा गजल, अमृत वाणी साँच ।

२२.

शीतल-शीतल तन हुआ, आया सावन मास
पागल है मन का सुआ, आया सावन मास।

झरती है रसधार अब, भींगी जाती देह
इस मन को किसने छुआ, आया सावन मास ।

आता सावन गर नहीं, नहीं छोड़ती मान
हार गई फिर से जुआ, आया सावन मास।

बूंदों से मुझको छुए, देह-देह कचनार
बादल है या बलमुआ, आया सावन मास ।

बालम का मत दुःख करो, खुद आयेगा लौट
सजनी का यह दुलरुआ, आया सावन मास ।

आभा इतनी जान लो, जो मौसम रसलीन
ये मेरी ही है दुआ, आया सावन मास ।

२३.

कैसे जोड़े प्रीत की, तुमसे अपनी डोर
रातें सब तो बीतती, पल छिन गिनते भोर ।

जबसे तुमसे नेह का, बांधी अपनी प्रीत
मौन हुआ है चमन तक, हम दोनों का शोर।

चाहा कब था भूल कर, अपना रस्ता छोड़
पर अपने इस भाव पर, मेरा रहा न जोर ।

मैंने चाहा था तुम्हें, कभी करूँ ना याद
जब.जब आयी याद तो, भींगे दृग के कोर ।

मन में उठती आग जब, तुम होते हो दूर
तुम ही कहो इस रात में, क्यों आये इंजोर ।

जाने कैसे काटती, आभा अपनी सांस
तन तो ज्वालामुख बना, लावा है हर पोर ।

२४.

चंदन का घर प्रेम है, जिसका ओर न छोर
खुशबू से भींगा हुआ, तन मन पोरम पोर

सूना था मन का सहन, कहीं न कोई गूंज
तुम आये तो भर गया, शहनाई का शोर

जब से उलझी प्रेम में, भूल गई मैं राह
अंधेरा ले आ गई, छोड़ कहीं इंजोर

प्रीत नहीं है जानती, समय-काल का फंद
नल-दमयन्ती जब मिले, रजनी हो गई भोर

विरह-अनल में मन धंसा कैसे उबरे हाय
जग तो जंगल की तरह, पल है आदमखोर

२५.

शासन—खाई-चभच्चा रँ
रखियोँ गोड़ तोँ अच्छा रँ

देश देखी कें कानी भरतै
कोय्यो साधू सच्चा रँ

मंत्री तें बड़का विभाग रोँ
बतियावै छै बच्चा रँ

जे भी पकलोँ फोँल तोड़ै छी
निकलै छै सब कच्चा रँ

आँख मुनी कें मत चल 'आभा'
डेग-डेग पर खच्चा रँ ।

२६.

केन्हों भुतहा गाँव लगै
शील होलों ई पाँव लगै

हर पाशा पर पांडव केरों
खाली गेलों दाँव लगै

पत्थर फेकलों करों नै कभियो
केकरो ठांव-कुठांव लगै

की होलै कि कोयलो बोली
काँव-काँव बस काँव लगै

समय देखी नै लागौं केकरो
'आभा' कें तें झाँव लगै।

■■■

डॉ. आभा पूर्वे : एक परिचय

जन्म	: 23 अक्टूबर 1964
जन्म-स्थान	: भागलपुर
माता	: जीवनलता पूर्वे
पिता	: रूद्रदत्त पूर्वे
शिक्षा	: बी. ए., एम. ए. (गोल्डमेडल) पी. एच-डी. (शोध-विषय–
प्रकाशित ग्रंथ	: 1. पलाश खिल रहे हैं (हिन्दी कविताएँ), 2. परबतिया (अंगिका उपन्यास), 3. अन्तहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), 4. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), 5. शिरीष की सुधा (हिन्दी कहानी-संग्रह), 6. चन्दन जल न जाए (हिन्दी कहानी-संग्रह), 7. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), 8. आकाशगंगा (हिन्दी अणुकथा-संग्रह–यंत्रस्थ)।
संपादन	: 1. गीत-गंगा (अंगिका गीत-संग्रह), 2. नवगीतकार मधुसूदन साहा, 3. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), 4. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनन्त यात्रा, 5. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ, 6. अंगिका लोकगीत, 7. अंगिका लोककथा, 8. केकरों चाँद, केन्हों चाँद, 9. खोई हुई लड़की का खत, 10. नया हस्तक्षेप (अनियतकालीन पत्रिका)।
रचना प्रकाशन	: देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
प्रसारण	: आकाशवाणी भागलपुर से कहानियों, कविताओं और नाटक का प्रसारण
संस्था से संबद्धता	: अध्यक्ष, अंग महिला साहित्यकार संसद
सम्पर्क	: शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर-1 (बिहार)